विषय - संस्कृत डॉ० ओम प्रकाश आर्य
बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा) महाराजा कॉलेज, आरा
तृतीय वर्ष, षष्ठ पत्र (व्याकरण एवं भाषाविज्ञान)

भाषा की उत्पत्ति :- दिनांक - 22/05/2020

भाषा की उत्पत्ति या भाषा का प्रयोग क्यों हुआ - इस प्रश्न का संतोषजनक उत्तर देना तो सम्भव है, परन्तु भाषा की उत्पत्ति कैसे हुई? इस प्रश्न का उत्तर देना सम्भवतः एक दुष्कर कार्य है पर आश्चर्य का विषय यही है कि भाषा विज्ञान पर किए गए हर अध्ययन में इस प्रश्न पर विचार किया गया है और यह विचार उन विद्वानों द्वारा भी किया गया है जिन्होंने इसे भाषाविज्ञान का विषय तक स्वीकार नहीं किया है। परिणाम स्वरूप विभिन्न कालों में विद्वानों ने अलग-अलग सिद्धान्तों और धारणाओं को प्रस्तुत किया जिनका संक्षिप्त विवेचन यहाँ दिया जा रहा है।

(1) दैवी उत्पत्ति का सिद्धान्त :-

यह सिद्धान्त भाषा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में सबसे प्राचीन सिद्धान्त

है। मानव जाति ने प्राचीन काल से इस सिद्धान्त को सिद्धान्त के रूप में नहीं अपितु एक विशेष प्रकार की श्रद्धा और विश्वास के रूप में माना है कि भाषा की उत्पत्ति ईश्वर ने स्वयं की है। वेदों में भाषा को दैवी वाक् कहा गया है तथा उसे विश्वरूपा माना गया है जिसे सभी प्राणी बोलते हैं- "दैवी वाचमजनयन्त देवाः। तां विश्वरूपां पशवो वदन्ति"। ईश्वर ने स्वयं यह वाणी मनुष्य को दी, ऐसा भी वेदों में कहा गया है-

इमां वाचं कल्याणीं आ वदानि जनेभ्यः।

मनुस्मृतिकार ने कहा है कि सृष्टि के प्रारम्भ में ही ईश्वर ने वेदों में सभी के नाम-कर्म स्थिर कर दिए-

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक्।
वेद शब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे॥

यहूदी लोग भी हिब्रू भाषा को ईश्वर प्रदत्त और आदि भाषा मानते हैं। जैन सम्प्रदाय में तो यह विश्वास प्रचलित है कि ईश्वर ने अर्धमागधी की रचना की तथा समग्र पशु पक्षी भी इसी भाषा को बोलते हैं। परम्परावादी हिन्दू संस्कृत को 'देवभाषा' कहते ही हैं।

वास्तव में भाषा को साक्षात् ईश्वर के द्वारा मनुष्य को दिया जाना किसी सिद्धान्त का नहीं अपितु विश्वास का विषय बन सकता है। इसे एक सिद्धान्त मान लेने पर हमारे सामने कई प्रकार की समस्याएँ आ जाती हैं जिनका समाधान सम्भव नहीं दिखाई देता। सबसे पहले तो इस बात का कोई प्रमाण हमारे पास

नहीं है कि ईश्वर ने मनुष्य को भाषा प्रदान की। यदि भाषा ईश्वर ने बनाई होती तो सारे संसार में एक ही भाषा होती। जिस प्रकार हमें आज सैकड़ों भाषाएँ और हजारों बोलियाँ सुनाई देती हैं, वैसा न होता। पूरे संसार में सभी मनुष्य एक ही भाषा बोलते। एक समस्या यह भी है कि इस प्रकार की भाषा में कभी कोई परिवर्तन नहीं आता और सभी कालों में भाषा का रूप एक-सा ही रहता। फिर, मनुष्य को यह ईश्वरीय भाषा पैदा होते ही प्राप्त हो जाती और उसे समाज में रहकर अनुकरण के माध्यम से यह भाषा सीखनी न पड़ती। जर्मनी के भाषाविद् प्राध्यापक हर्डर ने यह तर्क किया है कि यदि ईश्वर ने मनुष्य के लिए भाषा का निर्माण किया होता तो यह भाषा अधिक सुव्यवस्थित और तर्कसंगत होती। उसमें वे अन्तर्विरोध और विसंगतियाँ न होतीं जो आज इसमें प्राप्त होती हैं। इति।

Scanned with CamScanner